प्रकाशन तिथि : 01 जनवरी, 2021
प्रेषण तिथि : 04 जनवरी, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 20 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

श्री क्षत्रिय युवक संघ
ए-8 तारानगर ओटवाड़ा, जयपुर-302012 दूरभाष 0141-2466353
E-Mail : sanghshakti@gmail.com

मुख्यालय - ए-8 तारानगर, ओटवाड़ा, जयपुर-302012
संघप्रमुख प्रवास - आलोक आश्रम, बाड़मेर
११ दिसम्बर २०२०

नव वर्ष सन्देश

प्रिय आत्मीयजन
जय संघशक्ति!

सम्पूर्ण विश्व की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियां द्रुतगति से बदलती जा रही हैं। व्यक्ति अपने आप में एक इकाई के रूप में बहुत बदल चुका है, बदलता जा रहा है। परिवार बदल रहे हैं, टूट रहे हैं। लोगों की प्राथमिकताएं बदल रही हैं। उत्तरदायित्व बदलते जा रहे हैं। प्रतिज्ञाएं व आस्थाएं बदलती जा रही हैं, विश्वास बदलते जा रहे हैं। सब कुछ वह नहीं रहा जो होना चाहिए।

नासमझ व गैर जिम्मेदार लोगों की चेतना शक्ति लुप्त प्रायः हो चुकी है इसीलिए वे कुछ कर नहीं सकते किन्तु चिन्तनशील व्यक्ति इस सब को होते हुए देखकर चुप नहीं रह सकता। इस प्रकार के लोगों के अनेक समूह इस पर चिन्तन कर रहे हैं इस आसन्न संकट से मानवता को कैसे बचाया जाए।

ऐसी ही एक प्रतिकूलता विश्वव्यापी महामारी कोविड-19 बनकर आई। क्षुद्र दृष्टि वाले लोगों ने बहुत कुछ खोकर हार मान ली किन्तु संसार में कुछ कर गुजरने वाले लोग सतत संघर्षशील रहकर विश्व कल्याण में लगे हैं।

मनुष्य जाति, समाज, धर्म व राष्ट्रों की विचलितता को रोककर स्थिरता प्रदान की जाए। मानव जीवन में मानवीय मूल्यों की जो गिरावट आई है उसको सही दिशा प्रदान की जाए। इस विषय पर अनेक व्यक्ति और समूह काम कर रहे हैं।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए हमारा संघ लम्बे समय से कार्य कर रहा है। इसीलिए हम जानते हैं कि यह कार्य कितना आवश्यक है और कितना कठिन है। पूज्य तनसिंह जी ने सन् 1946 में 22 दिसम्बर के पवित्र दिन पर संघ की स्थापना कर मानव जाति पर कितना उपकार किया है।

इस कार्य में लगे लोग तपस्वियों का जीवन जीकर तन, मन और धन से लगे हुए हैं। उनका संकल्प है कि कैसी भी परिस्थिति आ जाए पर सतत यज्ञ के रूप कार्य को करते रहे हैं, करते रहेंगे। ऐसे देव स्वरूप महामानव पूज्य तनसिंह जी एवं उनके सहयोगी रहे हैं और आज भी ऐसे ही असंख्य निर्लिप्त साधक निर्धूम साधना कर रहे हैं। आप सभी लोगों ने जो अपूर्व एवं अतर्क्य सहयोग किया है, मैं आप सबका आभारी, कृतज्ञ एवं ऋणी हूं जिससे हम इस पावन पर्व - संघ स्थापना दिवस को मनाने के अधिकारी बने हैं।

आप सभी से अपेक्षा है कि आप अपनी आत्मा को जागृत रखकर अपना आत्म साक्षात्कार करके कभी अपने आपको सोने न दें और भगवत प्राप्ति के मार्ग संघ कार्य को करते रहें।

भगवान से सदैव प्रार्थना है - चलता रहे मेरा संघ, यही तो मेरा जीवन धन।

आप सब का सहयोगाकांक्षी

(भगवानसिंह)

संघ प्रमुख

संघ का हीरक जयंती में प्रवेश, मनाया 75वां स्थापना दिवस

राजस्थान के पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र में आज हम यहाँ पर श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्थापना दिवस मना रहे हैं, उत्सव मना रहे हैं। आप में से अधिकांश लोग संघ को जानते हैं, आप में से अधिकांश लोग अपने विद्याध्ययन काल में शाखाओं में आये हैं, शिविरों में या अन्य आयोजनों में आये हैं। इस बार स्थापना दिवस कार्यक्रम में सम्मिलित होने इस गांव में आये हैं। इस गांव के निवासियों से भी मैं कहना चाहता हूँ कि आप कितने भाग्यशाली हो कि आपके गांव में यह आयोजन हो रहा है। जहां क्षत्रिय युवक संघ के कार्यक्रम आयोजित होते हैं वह स्थान भी तीर्थस्थल बन जाता है इसीलिए मैंने कहा आप बड़े भाग्यशाली हैं। आज से यह स्थान तीर्थस्थान बन गया है। जब भी ऐसे कार्यक्रमों की बात होगी निश्चित रूप से यह स्थान याद रहेगा। यहां केशरिया ध्वज के नीचे, इसकी फरफराती छाया में, माँ भगवती के चरणों में और तनसिंह जी के सान्निध्य में आप भी अनुभव कर रहे हैं इस नीरवता को; कोई कोलाहल नहीं, कोई मांग नहीं है। आपका चित्त स्थिर हो गया है। जहाँ चित्त की स्थिरता होती है, वहाँ भगवान विराजते हैं। इसलिए भी आप सभी भाग्यवान लोग हैं। क्षत्रिय युवक संघ के काम को चलते हुए 75 वर्ष हो गए। जो गीत हमने गाया है वह पूज्य तनसिंह जी ने 42 वर्ष पहले एक शिविर में लिखा था। उनके लिखे गीत आज भी इतने ही जीवन्त है और आगे भी जीवंत ही रहेंगे। इनको भुलाया नहीं जा सकता, इनको गाया ही जाएगा। जब हम इन्हें गाते हैं तब हमारी भावनाएं जागृत होती हैं। हमें अनुभव होता है कि इससे अधिक और सुंदर काम क्या हो सकता है? पूज्य तनसिंह जी के दिव्य जीवन से जो प्रेरणा लेते हैं वे बैठे नहीं रह सकते, चल पड़ते हैं और जो चल पड़ते हैं वे रुकते नहीं हैं।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

(स्थापना दिवस पर आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम में माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संपादित अंश)

आज 22 दिसंबर सन 2020 का दिन है। आज के बाद दिन बड़े और रातें छोटी होने लग जाएंगी। ये प्रतीक इस बात का है कि विकास प्रारम्भ हो गया है। उत्तरोत्तर अब यह काम रुकने वाला नहीं है। कौनसा काम? जो 22 दिसम्बर 1946 के दिन श्री क्षत्रिय युवक संघ नाम की संस्था का उद्भव हुआ। एक 22 वर्ष के नवयुवक ने विद्या अध्ययन करते हुए इसकी कल्पना की। उसके बारे में अध्ययन किया, लोगों से संपर्क किया और संघ की स्थापना की। इसकी आवश्यकता क्या पड़ी? समाज में संगठन इससे पहले और भी बहुत थे, जिनका बड़ा नाम था लेकिन वह सब क्षत्रिय समाज में प्राण नहीं फूँक सके। जब क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना हुई उस समय भारत में अंग्रेजी शासन था। 1857 से लेकर 1947 तक उस विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए बलिदानी क्रांतियां हुई। लोगों को गोलियां खानी पड़ी, लोगों को जेल जाना पड़ा। काले पानी तक जाना पड़ा, आजीवन जेल में रहना पड़ा। उसके बाद यह आजादी मिली। देश टुकड़ों में बंटा हुआ था। 500 से अधिक देशी रियासतें थी। उनका एकीकरण होना आवश्यक था। उस समय के महान नेताओं ने यह कार्य किया। उस समय संस्कार रहित समाज, टूटते परिवारों को संस्कारित करना परम आवश्यक था। राज बदलते रहते हैं, सत्ताएं बदलती रहती हैं, कुर्सियों पर बैठने वाले लोग बदल जाते हैं पर इनसे कोई नई क्रांति घटित नहीं होती। थोड़े समय तक अच्छा शासन भी रहा लेकिन पूज्य तनसिंह जी ने आजादी से एक वर्ष पूर्व इस बात का अनुभव किया कि लोगों को संस्कारित किए बिना औपचारिक क्रांतियों से देश में बदलाव नहीं हो सकता।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ का हीरक जयंती में प्रवेश मनाया 75वां स्थापना दिवस

सांचौर

बेलवा

(पेज एक से लगातार)

विष के विनाश और अमृत की रक्षा के लिए जो यह उपक्रम क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रारम्भ हुआ है वह रुकने वाला नहीं है। मैं चला जाऊंगा, आप में से भी कुछ लोग चले जाएंगे, जाना सबको है, तो हमारा स्थान दूसरे लेंगे। यह ऐसी महान परंपरा है जो खंडित नहीं हो सकती। उपरोक्त बातें माननीय संघप्रमुख श्री ने बाड़मेर संभाग के गडरा रोड प्रान्त के अंतर्गत आने वाले खबड़ाला गांव में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में कही। 22 दिसंबर को प्रातः 11 बजे आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री ने आगे कहा कि हम टूटे-टूटे, बिखरे-बिखरे घूम रहे हैं जैसे हम एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं है। गांव में कितनी तरह के लोग रहते हैं, कितनी जातियों के लोग रहते हैं। भगवान ने किसी को छोटा या बड़ा नहीं बनाया है, यह तो हमने ही ऐसी व्यवस्था बना ली है। भेदभाव वाली यह व्यवस्था सोए हुए समाज का परिणाम है। सम्पूर्ण समाज, सभी जातियाँ जैसे सुप्तावस्था में हैं। इनको जागृति कौन देगा? जब जागृति नहीं होगी तो उठेंगे कैसे? जब तक उठेंगे नहीं हम चलेंगे कैसे और चलेंगे नहीं तो काम कैसे होगा? इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए पूज्य श्री तनसिंह जी ने क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। सम्पूर्ण मानवता को एक अमर संदेश देने के लिए यह संस्था खड़ी हुई। यह संस्था सभी के साथ खड़ी है। किसी से कुछ नहीं मांगती है, हमारा कोई शत्रु नहीं है। क्षत्रिय युवक संघ सभी को एकता के सूत्र में बांधना चाहता है। जब तक हमें ये सूत्र समझ में नहीं आता है तब तक हम बिखरे-बिखरे ही रहेंगे। स्वार्थी तत्व हमें बहका ले जाएंगे। जिस वातावरण में हम रह रहे हैं उसमें हम भटके जा रहे हैं। इससे बचना हमारा ही दायित्व है दूसरा तो केवल इंगित कर सकता है। चलना तो स्वयं को ही पड़ेगा। जब तक हम साधना में संलग्न नहीं होंगे तब तक संघ को हम पूरी तरह से नहीं समझ पाएंगे। साधना द्वारा ही वह दीपक हममें जल सकेगा जिसे जलाने का प्रयत्न श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है।

कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक रामसिंह माडपुरा, कृष्णसिंह राणीगांव, महिपाल सिंह चूली आदि भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की समाप्ति पर स्नेहभोज का भी आयोजन हुआ। स्थापना दिवस की पूर्वसंध्या को भजन संध्या का भी आयोजन किया गया जिसमें कालूसिंह गंगासरा, छोटूसिंह झिंझनियाली, भोमसिंह गिराब, स्वरूप सिंह सोढा, रमेश कुमार झलोड़ा ने भजन प्रस्तुत किए। इसी प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ का 75वां स्थापना दिवस 22 दिसंबर 2020 को देश भर में हर्षोल्लास से मनाया गया। कोविड महामारी से उत्पन्न परिस्थितियों के कारण स्थापना दिवस का मुख्य कार्यक्रम वर्चुअल माध्यम से मनाया गया जिसका सीधा प्रसारण सोशल मीडिया पर किया गया। 22 दिसंबर को प्रातः 07:30 बजे प्रसारित कार्यक्रम में संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बेन्याकाबास ने माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा दिए गए नववर्ष संदेश का पठन किया। तत्पश्चात माननीय संघप्रमुख श्री ने अपना उद्बोधन दिया। मुम्बई प्रान्त का स्थापना दिवस कार्यक्रम वर्चुअल माध्यम से 22 दिसंबर को रात्रि 9 बजे मनाया गया। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं से चर्चा करते हुए केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने संघ के उद्देश्य को विस्तार से समझाया। उन्होंने माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन तथा नववर्ष संदेश का सार समझाते हुए कहा कि संघ जो कार्य कर रहा है वो केवल हमारे समाज की ही नहीं सम्पूर्ण मानवता की आवश्यकता है। संभाग प्रमुख नीर सिंह सिंघाना ने महाराष्ट्र संभाग में चल रही सांघिक गतिविधियों की जानकारी दी। देवी सिंह झलोड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा वागसिंह लोहिड़ी ने नववर्ष संदेश का पठन किया। सूरत प्रान्त में भी सभी शाखाओं का सामूहिक स्थापना दिवस वर्चुअल माध्यम से मनाया गया। जैसलमेर संभाग में कीता गांव में संघ का 75वां स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी की समाज के प्रति पीड़ा ही श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रकट हुई। अपनी सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा संघ समाज की सुप्त चेतना को जागृत करने का कार्य कर रहा है। रतनसिंह बडोडागांव ने कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते हुए बताया कि सात्विक संगठन वर्तमान युग की अत्यंत महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। अपनी संस्कृति और परंपराओं को भूलती जा रही युवा पीढ़ी को सही मार्ग पर लाने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसा संगठन ही कर सकता है। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की ओर से उपस्थित भंवर सिंह साधना ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया तथा उपस्थित समाजबंधुओं को फाउंडेशन के उद्देश्य व कार्यप्रणाली से अवगत कराया। कार्यक्रम में प्रान्त प्रमुख नरेंद्र सिंह तेजमालता भी उपस्थित रहे। क्षेत्र में संघ का संपर्क बढ़ाने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा इसके लिए स्वयंसेवक हिन्दू सिंह म्याजलार तथा भगवान सिंह आकल द्वारा आकल, भोपा, डाबला, जोधा, नरसिंह ढाणी, कोरवा आदि गांवों में संपर्क अभियान भी चलाया गया। इसी प्रकार जैसलमेर स्थित शहीद पूनम सिंह स्टेडियम में जवाहिर कॉलेज होस्टल शाखा के स्वयंसेवकों द्वारा भी स्थापना दिवस मनाया गया। तेजमालता में भी शाखा स्तर पर स्थापना दिवस मनाया गया। बेरसियाला गांव में भी वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बेरसियाला तथा हरि सिंह बेरसियाला की उपस्थिति में स्थापना दिवस मनाया गया।

नागौर प्रान्त में भी विभिन्न स्थानों पर स्थापना दिवस कार्यक्रम मनाया गया। नागौर मंडल में अमर राजपूत छात्रावास में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें नागौर बाल कल्याण समिति अध्यक्ष कुंदन सिंह आचीणा, मारवाड राजपूत सभा के नागौर प्रतिनिधि तेज सिंह बालवा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला समन्वयक भवानी सिंह ने संघ के प्रति अपने विचार व्यक्त किए। प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने कार्यक्रम का संचालन किया। नागौर प्रांत के ही जायल मंडल की गुगरियाली शाखा में भी स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें सोहन सिंह गुगरियाली तथा व्याख्याता प्रकाश सिंह ने शाखा के स्वयंसेवकों को संघ कार्य की महत्ता समझाई। नागौर प्रांत के खींवसर मंडल की साठिका शाखा में भी संघ का 75वां स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें देवी सिंह साठिका ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया। नागौर प्रांत के जायल मंडल में छापड़ा शाखा में भी स्थापना दिवस कार्यक्रम शाखा स्थल पर आयोजित हुआ जिसका संचालन स्वयंसेवक नरेश सिंह छापड़ा ने किया। इसी प्रकार श्री क्षत्रिय युवक संघ का स्थापना दिवस समारोह जोधपुर संभाग के ओसियां प्रान्त के तिंवरी गांव में हेमा नाडा राजपूतों की ढाणी में संत श्री पारस गिरी व गजेंद्र गिरी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। पदम सिंह ओसियां ने संघ की स्थापना, उद्देश्य व कार्यप्रणाली की जानकारी देते हुए बताया कि क्षात्र धर्म का पालन ही मानवता की सबसे बड़ी सेवा हो सकती है, इसीलिए संघ क्षत्रिय कौम को स्वधर्म पालन के पथ पर आरूढ़ करने का कार्य कर रहा है। जोधपुर सम्भाग के ही शेरगढ़ प्रान्त में बेलवा गांव में बेलवा राणाजी शाखा स्थल पर स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रान्त प्रमुख भैरूसिंह बेलवा ने कहा कि क्षत्रिय कुल में जन्म लेते ही हमारा कर्त्तव्य बन जाता है कि हम मानवता की सेवा में अपना जीवन नियोजित करे दें। संघ यही बात हमें समझाकर स्वधर्म पालन में प्रवृत्त करने का कार्य कर रहा है। नरपत सिंह बस्तवा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इसी प्रकार जालोर संभाग के सांचौर प्रान्त का स्थापना दिवस कार्यक्रम राव बलूजी राजपूत छात्रावास, सांचौर में आयोजित हुआ जिसमें प्रान्त प्रमुख महेन्द्र सिंह कारोला द्वारा उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के उद्देश्य और कार्यप्रणाली से अवगत कराया गया। ईश्वर सिंह चौरा द्वारा नव वर्ष संदेश का पठन किया गया तथा प्रेम सिंह अचलपुर द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय प्रस्तुत किया गया। जालोर संभाग के भीनमाल प्रान्त के बागोड़ा मंडल में भी स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें सुमेर सिंह कालेवा ने उपस्थित समाजबंधुओं को संघ के उद्देश्य व कार्यप्रणाली का परिचय दिया। इसी प्रकार बाड़मेर के भियाड़ गांव के मातेश्वरी शाखा मैदान में भी स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। शिव प्रांतप्रमुख राजेन्द्रसिंह भिंयाड़ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में भौतिकवाद की दौड़ में हमारे संस्कारों का क्षय हो रहा है। हम अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित मानदंडों को भूलते जा रहे हैं जिन्हें याद दिलाने का कार्य श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है। बाड़मेर में ही थोब एवं रैवाड़ा में संघ का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। हुकमसिंह थोब ने नववर्ष संदेश का पठन किया। गुजरात के धोलेरा गांव में शाखा स्तर पर स्थापना दिवस कार्यक्रम 22 दिसंबर को शाम 5 से 6 बजे तक आयोजित हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक अम्बाप्रताप सिंह तथा प्रवीण सिंह धोलेरा की उपस्थिति में सम्पन्न कार्यक्रम में 75 ग्रामवासी सम्मिलित हुए।

संघ के मध्य गुजरात संभाग में खोड़ा, पिंपण, पलवाड़ा, मोडासर, मंगलतीर्थ सोसायटी साणंद, चेखला, ददुका, गरोडिया, काणेटी, वसह में स्थापना दिवस मनाया गया। गेपपरा (साणंद) में महिलाओं का अलग से कार्यक्रम रखा गया। बालोतरा संभाग के बायतु प्रांत में चान्देसरा, नोसर, चिड़िया व परेऊ में स्थापना दिवस मनाया गया। जोधपुर संभाग के भोपालगढ़ प्रांत में खारिया खंगार में कार्यक्रम आयोजित हुआ। सभी संभागों की संभागीय वर्चुअल शाखाओं में माननीय संघ प्रमुख श्री के उद्बोधन पर चर्चा कर स्थापना दिवस मनाया गया। श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन द्वारा भी वर्चुअल माध्यम से अपने अभिभावक का स्थापना दिवस मनाया गया।

पाली

कीता

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ के पोकरण संभाग (पोकरण व फलोदी) में निर्वाचित प्रधान एवं सरपंचों को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

श्री भगवानसिंह तंवर, प्रधान पंचायत समिति रामदेवरा

श्रीमती सागर कंवर, सरपंच, ग्राम पंचायत अजासर	**श्री हिम्मतसिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत आसकन्द्रा	**श्रीमती सुख कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत अवाय
श्री नरेन्द्रसिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत बोड़ाणा	**श्री देरावर सिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत सत्याया	**श्री सांगसिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत टावरीवाला
श्रीमती किरण कंवर, सरपंच, ग्राम पंचायत राजगढ़	**श्रीमती जाम कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत लुणा कल्ला	**श्रीमती संतु कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत ओला
श्री गायड़ सिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत सुभाषनगर	**श्री रतनसिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत फलसुंड	**श्री भोमसिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत सांकड़ा
श्रीमती सायर कंवर, सरपंच, ग्राम पंचायत भुर्जगढ़	**श्रीमती सुगन कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत भैंसड़ा	**श्रीमती भंवर कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत चौक
श्री शिवदानसिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत नेड़ान	**श्री नरपतसिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत दांतल	**श्री समंदरसिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत रामदेवरा
श्रीमती रसाल कंवर, सरपंच, ग्राम पंचायत लोहारकी	**श्रीमती सायर कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत राजमथाई	**श्रीमती सुमित्रा कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत मानासर
श्री केवलसिंह, सरपंच, ग्रा.प. सरदारसिंह की ढाणी	**श्रीमती मोहन कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत एका	**धापु कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत केलावा
श्री प्रेमसिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत भादरिया	**श्रीमती शोभा कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत बड़ी सिड्इ	**श्रीमती विमल कंवर,** सरपंच, ग्रा.प. कानसिंह की सिड्इ
श्री करणीपालसिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत मोटाई	**श्रीमती मधु भाटी,** सरपंच, ग्राम पंचायत टेकरा	**श्री प्रवीण सिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत टेपू
श्री राजेन्द्रसिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत बामणु	**श्री सवाईसिंह,** सरपंच, ग्राम पंचायत बूंगड़ी	**श्रीमती देवीकंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत बेंगटी कल्ला
श्री चन्द्रवीरसिंह, सरपंच, ग्राम पंचायत पडियाल	**श्रीमती भावना कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत बारू	**श्रीमती आशा कंवर,** सरपंच, ग्राम पंचायत लूणा

शुभेच्छु : गणपतसिंह अवाय, हरिसिंह सांकड़ा, नरपतसिंह राजगढ़, मैराजसिंह सांकड़ा, धर्मपालसिंह आसकन्द्रा, देवीसिंह झलोड़ा, मेघराजसिंह राजगढ़, महावीरसिंह राजगढ़, दीपसिंह राजगढ़, उगमसिंह आसकन्द्रा, मोतीसिंह सांकड़ा, अर्जुनसिंह फलसूंड, खेंगारसिंह झलोड़ा, मनोहरसिंह सांकड़ा, भवानीसिंह पीलवा, रणजीतसिंह चौक, वीरेन्द्रसिंह आसकन्द्रा, स्वरूपसिंह नेडान, गेनसिंह चांदनी, अमरसिंह रामदेवरा

एवं समस्त स्वयंसेवक, संभाग पोकरण, श्री क्षत्रिय युवक संघ।

संपादकीय

कर्मशील हुए बिना, मिटी कभी तबाही?

भगवान राम के समय अनेक राजा-महाराजा सम्पूर्ण आर्यावृत में शासनरत थे। अनेक ऋषि मुनि विभिन्न प्रकार के बौद्धिक एवं आध्यात्मिक चिंतन में संलग्न थे। ठेठ दक्षिण से लेकर उत्तर तक वह सब व्याप्त था जो राक्षसी संस्कृति को पसंद नहीं करता था। उसके विस्तार से चिंतित था और उससे पीड़ित भी था। लेकिन उसके बावजूद लंका को केन्द्र बनाकर राक्षसी संस्कृति सर्वत्र अपना विस्तार किए जा रही थी। भोग की संस्कृति अपना विस्तार किए जा रही थी। भौतिकवाद यहां तक अपना विस्तार कर चुका था कि लोग मानव मांस का भक्षण भी अपनी शान समझने लगे थे। सभी लोग इन सब परिस्थितियों को अपनी नियति मान चुके थे, अभ्यस्त हो चुके थे इसीलिए शोषकों के विरुद्ध खड़े होने की अपेक्षा इस आशा में उनके साथ दिखने का प्रयास करते थे कि शायद इस बहाने उनके साथ अत्याचार कुछ समय के लिए स्थगित हो जाए। उनकी बारी शायद थोड़ी आगे खिसक जाए। यह सब स्थितियां, उस समय की हैं जिस समय देश में दशरथ जैसे चक्रवर्ती सम्राट शासन कर रहे थे। जनक जैसे धर्मात्मा का शासन था। बाली जैसा शक्तिशाली शासक विद्यमान था जिससे व्यक्तिगत बल में रावण भी नहीं जीत सकता था। इतना ही नहीं बल्कि यह उस काल का वर्णन है जब वशिष्ठ वाल्मिकी, अत्रि, अगस्त्य, गौतम, शतानंद, श्रृंगी, सुतीक्ष्ण जैसे चिंतक विचारक, ज्ञानी एवं तपस्वी उपस्थित थे। इन सबके बावजूद सम्पूर्ण जम्बूद्वीप राक्षसी संस्कृति के संवाहकों का खुला मैदान बना हुआ था। चक्रवर्ती सम्राट दशरथ की राजधानी के निकट तक ताड़का, मारीच, सुबाहु जैसे राक्षस अपनी बस्ती बसाकर आम बस्तियों को उजाड़ रहे थे। ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि सनातन संस्कृति के इतने बड़े-बड़े प्रतीक होने के बावजूद ऐसा कैसा संभव हुआ? कैसे मानव मांस भक्षण तक की अमानवीय स्थिति पैदा हो गई और फिर इस परिस्थिति का उच्छेद कैसे प्रारम्भ हुआ? इसी प्रश्न का उत्तर है इस आलेख का शीर्षक 'कर्मशील हुए बिना मिटी कभी तबाही?'

सात्विक शक्तियां उपस्थित होते हुए भी निष्क्रिय थीं। उनकी उपस्थिति जनसमाज में कोई त्वरा उत्पन्न नहीं करती थी क्योंकि वे सभी स्वयं त्वरा विहीन थीं। ऐसी ही त्वराविहीन व्यवस्था में पल बढ़ रहे थे भगवान राम। उनका रामत्व चक्रवर्ती सम्राट के महलों में कैद था लेकिन उसी त्वरा विहीन व्यवस्था में ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने त्वरा पैदा की। उनके भीतर समाए क्षत्रियत्व ने उनके ब्रह्मत्व को सक्रिय कर दिया और परिणाम स्वरूप भगवान राम का रामत्व महलों की कैद से निकलकर आमजन के बीच पहुंचा। आमजन की पीड़ा को समझने में सक्षम बना। उस पीड़ा को दूर करने के लिए संघर्ष को प्रवृत्त हुआ और उस संघर्ष के लिए आवश्यक क्षमता अपने वास्तविक गुरु विश्वामित्र से प्राप्त की। एक विश्वामित्र के कर्मशील होने पर ताड़का वन ताड़का, सुबाहु, मारीच आदि से मुक्त हो गया। अहिल्या का उद्धार हो गया। परशुराम का व्यर्थ का अहंकार तिरोहित हो गया। वनवासियों का आत्माभिमान लौटने लगा। ऋषियों के जप, तप व यज्ञ निर्विघ्न संपन्न होने लगे। आश्रम ज्ञान, ध्यान, कला के केन्द्र के रूप में स्थापित होने लगे। ऋक्ष, वानर जैसी आदिम जातियां शक्तिशाली राक्षस साम्राज्य से लड़ने को उद्यत हो गईं और अंततः महान शक्तिशाली रावण का उसके कुनबे सहित अंत हो गया। आदर्श राम राज्य की स्थापना हो गई। लेकिन इन सबके पीछे ब्राह्मणत्व को प्राप्त एक क्षत्रिय की क्रियाशीलता थी, उनके कर्मशील होने से रावण का रावणत्व ही समाप्त नहीं हुआ बल्कि राम का रामत्व भी स्थापित हो गया। ऐसी दृढ़ स्थापना हुई कि आज युग बीत जाने पर भी वह रामत्व हम सबके लिए आदर्श है।

आज भी ऐसी ही कर्मशीलता की आवश्यकता है। आज भी दशरथ जैसे चक्रवर्ती, जनक जैसे धर्मात्मा और बाली जैसे शक्तिशाली लोगों का अभाव नहीं है। आज भी वाल्मिकी, अत्रि, वशिष्ट, सुतीक्ष्ण जैसे चिंतकों, विचारकों एवं तपस्वियों की कमी नहीं है लेकिन विश्वामित्र जैसे क्षत्रिय का अभाव है जो ब्राह्मणत्व को अर्जित कर ब्रह्मर्षि की उपाधि अपने पुरुषार्थ के बल पर बलात् हासिल करने के बावजूद अपने क्षत्रियत्व के अहसास को समाप्त नहीं होने देता। पूज्य तनसिंह जी ने इसी आवश्यकता को समझा और इसी आवश्यकता की पूर्ति का मार्ग प्रदान किया। उन्होंने बताया कि क्षत्रिय को ब्राह्मणत्व के अभाव को भी दूर करना और अपने क्षत्रियत्व के अहसास को भी जीवित रखना है। इसीलिए उन्होंने मंत्र दिया कि, 'कर्मशील हुए बिना, मिटी कभी तबाही?' उन्होंने समाज में व्याप्त समस्याओं को दूर करने में स्वयं प्रवृत्त होने का मार्ग ही नहीं बताया बल्कि विश्वामित्र की तरह घरों में कैद रामों को उनके रामत्व का स्मरण करवाकर आमजन में रामत्व के विस्तार का मार्ग बताया ताकि हर आम और खास अपनी क्षमताओं को समझ सके तथा अपनी समस्याओं के हल के लिए किसी का मुंह ताकने की अपेक्षा स्वयं उनके हल के लिए कर्मशील हो। पूज्य तनसिंह जी के उसी मार्ग का नाम है श्री क्षत्रिय युवक संघ। एक ऐसा विश्वामित्र जो अपने सम्पर्क में आने वाले में क्रियाशीलता की चिंगारी जागृत करता है और उस चिंगारी को आग बनाने का शिक्षण प्रशिक्षण भी प्रदान करता है ताकि उस आग से प्रज्ज्वलित उसका प्रत्येक अंश जिस भी कोयले के सम्पर्क में आए, उसे भी प्रज्ज्वलित कर कर्मशील होने की प्रेरणा देवे ताकि तबाही को मिटाने के आयोजन को गति मिल सके। यह विश्वामित्र केवल वाट्सएप वाट्सएप खेलने तक ही सीमित नहीं है, केवल किसी समारोह में टेबल पर बैठकर चर्चा करने तक सीमित नहीं है और ना ही केवल बौद्धिक चौंचलेबाजी तक सीमित है बल्कि केवल और केवल कर्मशील होने की बात करता है चाहे न्यून अंश में ही हो। आएं हम भी इस कर्मशीलता की भागीरथी में डुबकी लगाने को प्रस्तुत होवें।

खरी-खरी

आत्म विश्वास का अभाव और अतिरेक

आत्म विश्वास का अर्थ होता है अपने आप पर विश्वास। यह एक श्रेष्ठ गुण है जो व्यक्ति को श्रेष्ठ करने को प्रेरित करता है। अपने आपको श्रेष्ठ बनाए रखने को प्रेरित करता है। आत्म विश्वास का अभाव व्यक्ति में आत्महीनता पैदा करता है उसमें अपने आपको कमजोर मानने का भाव पैदा करता है और यह आत्महीनता अंततः उसमें उस हीनता को अपनी नियति मानकर स्वीकार करने का भाव भी पैदा करता है। इस प्रकार आत्म विश्वास का अभाव एक घातक अभाव है जो व्यक्ति को अपनी पतित स्थिति से मुक्त नहीं होने देता और इससे भी आगे कहें तो पतित नहीं होते हुए भी स्वयं को पतित मानने को प्रेरित करता है। लेकिन इसका अतिरेक भी उसी प्रकार हानिकारक है जिस प्रकार हर अच्छी चीज का अतिरेक जायका बिगाड़ देता है। केवल जायका ही नहीं बिगाड़ता बल्कि स्वास्थ्य को हानि भी पहुंचाता है। ऐसे में किसी झूठी बात पर, झूठे एवं बनावटी तथ्यों पर और मनगढ़त प्रचार पर आधारित आत्म विश्वास का अतिरेक हो जाए तो ऐसा मिथ्या आत्मविश्वासी केवल स्वयं के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए घातक हो जाता है। आत्म विश्वास के ऐसे ही अभाव और अतिरेक से आज हमारा समाज ग्रसित हो रहा है। यह आत्मविश्वास के अभाव का ही परिणाम है कि हमारे समाज के राजनेता समाज के किसी व्यक्ति के लिए न्याय की मांग उठाते हुए भी केवल इसीलिए झेंपते हैं कि कही अपराधियों का पक्ष नाराज न हो जाए। कहीं अगली बार उन्हें वोट ना मिलें और वे हार नहीं जाएं। लाखों, हजारों लोगों का मत लेकर बने राजनेता जब चंद अपराधियों और उनके समर्थकों के डर से न्याय की बात करने से घबराते हैं तो यही माना जाना चाहिए कि उन्हें अपने व्यक्तित्व, कृतित्व एवं चरित्र पर तनिक भी विश्वास नहीं है और वे अपने आपको ऐसे अपराधियों एवं उनकी कृपा पर छोड़ चुके हैं। जब हमारे किसी सम्मानित व्यक्ति को कोई हल्के स्तर का स्थानीय राजनेता धमकाता है, अशिष्टता पूर्वक बात करता है और वे उसके समक्ष सभ्यता दिखाते हैं तो यही लगता है कि आत्म विश्वास का अभाव अपने न्यूनतम स्तर पर पहुंच चुका है और लगता है कि अब उठना असंभव नहीं तो अति कठिन तो अवश्य है। जब न्याय और व्यवस्था के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले कौम के लोग न्याय की बात करने से इस प्रकार बचते हैं या अन्याय को सहन करते हैं तो यह उन लोगों के लिए ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र के लिए भी अतिशय घातक है। इसी घातक स्थिति का आज हम सामना कर रहे है। स्थिति की इस घातकता का परिणाम तब और बढ़ जाता है जब आत्म विश्वास के नाम पर उसका अतिरेक प्रकट होने लगता है। यह अतिरेक वास्तव में आत्म सम्मान नहीं होता बल्कि झूठे तथ्यों के प्रचार के बल पर उपजा मिथ्याभिमान होता है। ऐसे मिथ्याभिमानी व्यक्ति जब शासन, प्रशासन और राजनीति में अपना सिक्का जमा लेते हैं तो फिर पूरी व्यवस्था का दुरुपयोग होना प्रारंभ हो जाता है। ऐसे मिथ्याभिमानी लोग यदि मंत्री बन जाएंगे तो झूठा इतिहास लिखवाएंगे। यदि अफसर बन जाएंगे तो गलत तरीके से अपने मिथ्याभिमान को स्थापित करने के लिए सहायक बनेंगे। उनको प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन प्रदान करेंगे। यदि ऐसे लोग किसी व्यवस्था के कर्ताधर्ता बनेंगे तो उस व्यवस्था में बेशर्मीपूर्वक अपने पक्ष के लोगों को स्थापित करेंगे और न्याय की बात करते समय सदैव अपना पक्ष-विपक्ष देखेंगे। ऐसा ही सभी तरफ हो रहा है। ऐसा अतिरेक हमारे समाज के लोगों में नहीं है ऐसा भी नहीं है लेकिन वह अतिरेक केवल आभासी है जो सोशल मीडिया पर अपना पराक्रम दिखाकर शांत हो जाता है और स्थिति को और अधिक बिगाड़ने में सहयोगी बनता है। दुर्भाग्य से हम आज इन सभी पीड़ाओं से पीड़ित हैं। आत्मविश्वास के अतिरेक से पीड़ित मिथ्याभिमानी लोग हमारे समाज को पीड़ित करने का कोई अवसर चूकते नहीं हैं। वे हमारे इतिहास और गौरव को चुराने, लूटने या कलंकित करने का कोई अवसर चूकना नहीं चाहते। व्यवस्था में अपनी पकड़ के बल पर वो हर हथकंडा अपनाते हैं जो हमें पीड़ित कर सके और हमारे अपने लोग या तो अपनी अज्ञानता का आभासी दुनिया में भौंडा प्रदर्शन कर स्थिति को और अधिक पेचीदा बनाते हैं या ऐसे तत्वों के भय से शांत रहकर जैसे तैसे अपनी वर्तमान में उपलब्ध किसी सुविधाजनक स्थिति को बरकरार रखने को चुप रहते हैं। दोनों ही स्थितियां हमारे अस्तित्व को एक गौरवशाली समाज के रूप में कायम रखने के लिए घातक हैं। लेकिन इसका उपाय भी केवल क्षोभ व्यक्त करना या रोना रोना नहीं है। इस स्थिति का एक मात्र कारण हमारी अपनी कमजोरियां है और इसका एक मात्र उपाय उन कमजोरियों को दूर कर शक्तिशाली बनना है। शारीरिक रूप से शक्तिशाली बनना होगा, आर्थिक रूप से संबल बनना पड़ेगा। राजनीतिक और प्रशासनिक रूप से भी सबल बनना पड़ेगा और इन सबसे महत्वपूर्ण चारित्रिक रूप से सबल बनना पड़ेगा क्योंकि इसके अभाव में सभी सबलताएं मिथ्याभिमान ही बढ़ाएगी। कमजोर व्यक्ति का ही आत्मभिमान धरातल पर होता है, सबल व्यक्ति का स्वाभिमान सदैव सबल ही होता है। इसीलिए यदि हमें इस अभाव को दूर करना है और अतिरेक के दुष्प्रभाव से बचना है तो एकमात्र उपाय सबल बनना ही है और उसके बिना कुछ संभव नहीं है। हमारी वह सबलता ही हमारे उन सभी लोगों के स्वाभिमान को भी जागृत करेगी जो आज अपना मुंह छिपाते हैं।

आपराधिक चुप्पी के खिलाफ निंदा प्रस्ताव

21 दिसम्बर को बी.एस.एफ. के एक उपनिरीक्षक बन्नेसिंह पालड़ी सिद्धा के साथ जोधपुर से अपने गांव लौटते समय बस में सीट की सामान्य बात को लेकर एक जाति विशेष के कुछ मनचले युवकों द्वारा सरगिया गांव में बस रुकवा कर बेरहमी से मारपीट की गई। जबकि बन्नेसिंह की शिकायत पर पीपाड़ पुलिस द्वारा उस स्थान से 10 किमी पहले उन युवकों को झगड़ा न करने के लिए पाबंद किया गया था। इस प्रकार शासन प्रशासन के प्रभाव को धत्ता बताते हुए एक निरपराध सैनिक के साथ अपराध हुआ, समाचार माध्यमों एवं सोशल मीडिया में इस घटना का पर्याप्त प्रचार भी हुआ लेकिन उसके बावजूद राज्य की राजनीति के पक्ष-विपक्ष के नेताओं ने उन अपराधियों के लिए सजा की मांग तो दूर बल्कि निंदा तक नहीं की। राज्य की कानून व्यवस्था को लेकर नित्य प्रति बयान जारी करने वाले विपक्षी नेताओं ने भी मुंह नहीं खोला। क्यों? क्योंकि अपराधी इस क्षेत्र की प्रभावशाली जाति से संबंध रखते हैं। राज्य के दोनों राजनीतिक दलों के प्रदेशाध्यक्ष उसी जाति से हैं। राज्य की पुलिस के प्रमुख भी उसी जाति से हैं। क्या यही कारण है? उस जाति के ही नहीं बल्कि क्षेत्र के सांसद सहित अन्य प्रतिनिधि भी इस घटना पर चुप्पी साधे रहे क्योंकि उनको भी उन अपराधियों की जाति का डर लगता है। इस प्रकार प्रदेश के सभी नेताओं ने निशुद्ध रूप से इस आपराधिक घटना पर चुप्पी साध ली और इस चुप्पी को भी अपराध ही कहा जा सकता है क्योंकि इस चुप्पी के कारण ही ऐसे खुले अपराध को प्रोत्साहन बल मिलता है। राजनेताओं के इस विंदित व्यवहार के प्रति श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन ने एक निंदा प्रस्ताव पारित किया और दोनों पार्टियों के स्थानीय प्रतिनिधियों को फाउंडेशन के स्थानीय सहयोगियों ने इस निंदा प्रस्तावों की प्रतियां देकर प्रदेश नेतृत्व को भेजने का आग्रह किया गया।

राव रूपाजी की जयंती मनाई

राव रिड़मल जी के 24 पुत्रों में से एक राव रूपाजी का जन्म मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की अष्टमी वि.सं. 1480 को हुआ। राव रिडमल जी व चौहान (नाडौल) रानी राम कंवर के गर्भ से तीन पुत्र चाम्पा (चाम्पावत), रूपा (रूपावत), मंडला (मण्डलावत) हुई। राव रूपा जी जोधपुर व बीकानेर रियासत के साथ अनेक युद्ध लड़े और वीर गति प्राप्त की। इनकी 597वीं जयंती 22 दिसम्बर को विभिन्न जगहों पर मनाई गई। बीकानेर जिले के भेलू, उदट, पाबूसर, मियासर, उदासर, शोभाणा, भादला, लुम्बासर, कुम्भासर व जोधपुर में बूंगड़ी, चिमाणा, चाखू, मूंजासर, जालोड़ा, चाड़ी, लूणावास, लोहावट, माणकलाव, जाजीवाल, कुथड़ी, जोधपुर शहर में जयंती मनाई। इसके अलावा रिदवा, कोटड़ी, भेड़, कड़वा, भादा, कलवानी, देसूरी, बीकानेर शहर, श्रीकरणी राजपूत छात्रावास नोखा, चारणवाला कोढ़ (एम.पी.), सूरत, वापी, मुम्बई, ढाकोरिया के साथ विदेश में भी दुबई और मैक्सिको में बड़ी धूम-धाम के साथ राव रूपा जी की जयंती मनाई। राव रूपा स्मृति संस्थान के अध्यक्ष भंवरसिंह उदट को बनाया गया। भंवरसिंह जी क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हैं और बी.एस.एफ. कमांडेंट पद से सेवानिवृत हैं। सचिव पद पर भवानीसिंह खुडियाला को बनाया गया। भेलू में मुख्य वक्ता के रूप में राजस्थानी साहित्य के कवि

गिरधर दान जी रतनू ने राव रूपा जी , सादा जी रूपावत, आईदान जी रूपावत, भोजराज रूपावत, खेतसिंह रूपावत की यशो गाथा का वर्णन किया साथ में डिंगल काव्य में उनकी वीरता का रसपान करवाया। माणकलाव में तुलसी फार्म में जोधपुर के आसपास के गांवों में मिलकर राव रूपा जी की जयंती मनाई जिसमें अध्यक्ष व सचिव भी उपस्थित थे और निर्णय लिया कि 600वीं जयंती वृहद स्तर पर मनाई जाएगी। इस अवसर पर संकल्प लेकर सभी ने एक नशा या कुरीति को त्यागने का निश्चय किया। मूंजासर में सती माता के मंदिर में कार्यक्रम हुआ जिसमें पौधारोपण किया गया और सबने मिलकर अपने पैसों से मंदिर तक ग्रेवल सड़क बनाने का निर्णय लेकर कार्य प्रारम्भ भी कर दिया। इस अवसर पर बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने, नशा प्रवृति पर अंकुश लगाने, सामाजिक कुरीतियां का त्याग करने, पौधारोपण, स्वच्छ भारत अभियान, भ्रूण हत्या निषेध कानून को सख्ती से लागू करने का संकल्प लिया।

राव कुंपाजी की 518वीं जयंती मनाई

गिरि सुमेल युद्ध के नायक एवं राठौड़ों की कुंपावत खांप के पितृ पुरुष राव कुंपाजी की 518वीं जयंती 26 दिसम्बर को अनेक स्थानों पर मनाई गई। नागौर जिले के सागु बड़ी में इस अवसर पर गांव के कुंपावत परिवारों की वंशावली का प्रकाशन किया गया। जयसिंह सागुबड़ी ने इस अवसर पर राव कुंपाजी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

अजमेर जिले से निर्वाचित सभी जनप्रतिनिधियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती सुशील कंवर,
पलाड़ा, जिला प्रमुख,
अजमेर

श्रीमती मीनू कंवर,
नगर,प्रधान, पंचायत
समिति मसूदा

श्री होनहार सिंह,
सापणदा, प्रधान,
पं. समिति केकड़ी

श्री प्रभाकरण सिंह,
बिसून्दनी, उप प्रधान,
पं. समिति सावर

एवं सभी जिला परिषद सदस्यों, पंचायत समिति सदस्यों, सरपंचों, उप सरपंचों व वार्डपंचों को उनके निर्वाचन पर बधाई एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : कर्नल हिम्मतसिंह पीह, कर्नल हनुमानसिंह मुंडोता, भवानीसिंह पिलोदा, छुट्टनसिंह दाबडदुंबा, सायरसिंह चण्डालि, दशरथसिंह रावणिया, दातारसिंह थांवला, विजयराजसिंह जालिया, हिम्मतसिंह पिलोदा, शिवदयालसिंह खुड़ी, किशोरसिंह देवलिया, पृथ्वीसिंह सापणदा, भगवानसिंह देवगांव, देवेन्द्रसिंह बाज्यास, बलबीरसिंह देवलिया, महताबसिंह सराणा, करणसिंह सरदारसिंह की ढाणी, कुलदीपसिंह तित्यारी, हरिसिंह पिलोदा, शिवदर्शनसिंह गुलगांव, भगवानसिंह देवलिया।

मध्य गुजरात प्रांत ने मनाई गीता जयंती

संघ के मध्य गुजरात प्रांत में साणंद मंडल के वांसणा गांव में 25 दिसम्बर को गीता जयंती के अवसर पर कार्यक्रम रखा गया। संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह जी धोलेरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'गीता का सार है, मेरी बुद्धि धर्म क्षेत्र में काम करे।' उन्होंने कहा कि गीता के वक्ता और श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रेरक ने एक ही बात कही है। गीता ज्ञान का रूप है तो संघ उसका क्रियात्मक स्वरूप है। गीता का ज्ञान हमारे लिए है और हम सब इसे अपना मानकर सांघिक निर्देशन से आचरण में लाएं। अर्जुन ने अपने रथ की ही नहीं बल्कि जीवन की डोर भगवान श्री कृष्ण को सौंप दी थी। उसी प्रकार हम भी अपने आपको संघ को सौंपे। इसी दिन अपराह्न काणेटी की दरबारवाड़ी में महिलाओं व बालिकाओं का कार्यक्रम रखा गया। यहां माननीय अजीतसिंह जी ने नारी धर्म और गीता विषय पर बोलते हुए बताया कि गीता का दर्शन हमें जीवन के हर पक्ष की समस्याओं का हल प्रदान करता है। नारी धर्म के पालन में इसका अध्ययन मार्गदर्शन का काम करता है। दोनों कार्यक्रमों में कोविड प्रोटोकॉल का पूर्ण पालन किया गया।

कपूत से सपूत बनाने की प्रणाली है संघ

बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में रविवार 27 दिसंबर 2020 को प्रातः 8:00 बजे बाड़मेर शहर प्रांत की साप्ताहिक शाखा लगी। जिसमें तन सिंह जी की डायरी पर चर्चा हुई। चर्चा में यह बात सामने आई कि जिस प्रकार शराब पीने से व्यक्ति को शांति व सुख की क्षणिक प्राप्ति होती है ठीक वैसी ही प्राप्ति हमारे जीवन में हों। शराबी जब शराब पीता है तो उसको होश नहीं रहता, उसकी यह सोचने की शक्ति नहीं रहती कि लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे? संसार क्या कहेगा? इसमें लाभ है या हानि? वह तो बेपरवाह हो जाता है, उसको किसी भी बात की चिंता नहीं रहती। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम शराब पीना शुरू कर दें। यह तो एक उदाहरण है। हमें स्वयं को जागृत रखते हुए, होश में रखते हुए इस प्रकार का अभ्यास करना है कि हम अपना कर्तव्य निर्वहन करते समय यह ना सोचें कि लोग क्या कहेंगे? इस कार्य में लाभ है या हानि? शराबी का नशा कृत्रिम है लेकिन हमें अपने उद्देश्य व कर्तव्य की ऐसी धुन लग जाए, ऐसा नशा छा जाए कि उसके बिना एक क्षण भी जी ना सकें। एक अन्य अवतरण पर चर्चा में यह बात उभर कर आई कि किसी भी विकासशील जाति की संपत्ति और श्री उसके सपूतों की संख्या पर निर्भर करती है। जब किसी जाति या राष्ट्र का अधःपतन होता है उससे पहले उस जाति और राष्ट्र की स्त्रियां सपूत पैदा करना बंद कर देती हैं। उस समय अगर उस जाति में कपूतों को सपूत बनाने की कला और शिक्षा नहीं होती है तो उस जाति का बचना कठिन है। संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात को स्पष्ट करते हुए कहा कि आज हमारे समाज में घर परिवार में संस्कारों की धीरे-धीरे कमी आ रही है, हानि हो रही है, जिस आंगन में कभी देवता अवतार लिया करते थे वहां आज कपूत पैदा हो रहे हैं, जहां मदालसा जैसी माताएं बच्चों की निमार्ता हुआ करती थी वहां आज माताएं बच्चों को संस्कार देना भूल रही है, अधिक लाड प्यार देकर वे बच्चों को इतना बिगाड़ देती हैं कि वह कुमार्ग पर चला जाता है, वह अनियंत्रित हो जाता है। लेकिन हर जगह ऐसा ही हो रहा है, यह नहीं कह सकते क्योंकि आज भी हमारे समाज में ऐसी माताएं हैं जो समाज को ध्रुव, प्रताप, चंद्रसेन, दुगार्दास, तन सिंह जी जैसे सुपुत्र सौंप रही हैं। हमारा कितना परम सौभाग्य है कि हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी जीवन प्रणाली मिली जिससे आज हम यहां चर्चा के अधिकारी बने हैं। जो कार्य घर परिवार में समाज में माता-पिता अभिभावक अपने बच्चों के लिए नहीं कर पा रहे हैं उसकी पूर्ति श्री क्षत्रिय युवक संघ करता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में सपूतों का निर्माण कर रहा है। जब सपूतों का बाहुल्य हो जाएगा तो फिर जाति की संपत्ति व श्री चरमोत्कर्ष पर होगी। आवश्यकता है हम निरंतर इस प्रकार की चचाओं में, संगोष्ठी में, शाखाओं में, शिविरों में आते रहें, अपने बच्चों को भी लाएं। अपनी संतान के लिए हम धन दौलत नहीं दे पाए तो कुछ फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन अगर हम उनको क्षत्रिय युवक संघ नहीं दे पाए तो आखिर पछतावा ही शेष रहेगा। इसलिए समय रहते इस बात की महत्ता को समझना होगा। संघप्रमुख श्री के अलावा शाखा में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा का भी अनुभव लाभ प्राप्त हुआ, वे अपने परिवार सहित आश्रम प्रवास पर आए हुए थे। शाखा में आश्रम वासियों सहित बाड़मेर शहर के 24 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

मेवाड़ क्षत्रिय महासभा द्वारा जनप्रतिनिधि सम्मान

उदयपुर के बी.एन. विश्वविद्यालय के कुंभा सभागार में 18 दिसम्बर को मेवाड़ क्षत्रिय महासभा द्वारा नवनिर्वाचित जिला प्रमुख, उप जिला प्रमुख, प्रधान, उप प्रधान एवं अन्य जनप्रतिनिधियों का सम्मान किया गया। सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रदीपसिंह सिंघोली ने राजनीति में भागीदारी की आवश्यकता बताते हुए कहा कि जिस भी पार्टी में रहे, वहां अपनी पैठ बनाकर रखें। किसी के पिछलग्गू रहकर कार्य न करें। महासभा के अध्यक्ष बालुसिंह कानावत ने राजनीति में रहते हुए देश और समाज के लिए कार्य करने को आवश्यक बताया। मनोहरसिंह कृष्णावत ने शिक्षा, रोजगार, महिलाओं व युवाओं की भागीदारी आदि विषयों पर बात की। महिलाओं ने जिला प्रमुख ममता पंवार का सम्मान किया। चन्द्रवीरसिंह करेलिया ने सबका स्वागत किया।

'संघ आपके द्वार' कार्यक्रम के तहत सम्पर्क

श्री क्षत्रिय युवक संघ के बनासकांठा प्रांत की तरफ से चलाए जा रहे 'संघ आपके द्वार' कार्यक्रम के तहत 20 दिसम्बर रविवार को वलादर गांव के मफतसिंह पुत्र रड़मलसिंह व परबतसिंह पुत्र अरजण सिंह वलादर के फार्म हाउस पर पांच-पांच परिवारों को एकत्र कर संघ चर्चा का आयोजन किया गया। प्रवीणसिंह व शैलसिंह वलादर ने संघ स्थापना के पीछे पूज्य तनसिंह जी के विचार के बारे में जानकारी दी। प्रांत प्रमुख अजीतसिंह कुणघेर ने संघ को समाज की सभी समस्याओं एवं रोगों का उपाय बताया एवं संघ की गतिविधियों को अपने जीवन में स्थान देने का आह्वान किया।

ग्राम टेपू का डिजिटलीकरण, वंशावली का विमोचन

जोधपुर के ग्राम टेपू के सरपंच प्रवीणसिंह द्वारा 15 दिसम्बर ग्राम पंचायत की वेबसाइट का विमोचन किया गया। इसमें गांव की ऐतिहासिक, प्रशासनिक, भौगोलिक, प्रशासनिक आदि की जानकारी के साथ-साथ गांव के केलण भाटी परिवारों की वंशावली एवं उनसे संबंधित सभी जानकारियों को संग्रहित किया गया है। साइट का निर्माण राजेन्द्रसिंह, नरेन्द्रसिंह व राणेखान द्वारा किया गया है।

रॉयल ग्रुप परिवार का रक्तदान शिविर

जयपुर के रॉयल ग्रुप द्वारा प्रदेश स्तरीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह आयोजन जयपुर सहित 15 जिलों में आयोजित करने के समाचार हैं जिनमें आयोजकों ने बताया कि लगभग 2000 युनिट रक्तदान किया गया। जयपुर में आयोजित रक्तदान शिविर में पूर्व मंत्री राजपालसिंह शेखावत, युनुस खान, धर्मेन्द्रसिंह राठौड़, राजपूत सभा के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा, भाजपा प्रदेश मंत्री श्रवणसिंह बगड़ी आदि गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पेज एक लगातार)... **(स्थापना दिवस पर आयोजित वर्चुअल कार्यक्रम में माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संपादित अंश)**

उस समय उन्होंने समाज का, इतिहास का, सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन किया और उसके बाद एक मार्ग निकाला जो संसार को एक स्थायी व्यवस्था दे सके। तब 'सहयोगी व सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली' के आधार पर पूज्य तनसिंह जी ने संघ की स्थापना की। उस समय की विकट परिस्थितियों में क्षत्रिय समाज भी भ्रमित था, वह संघ को नहीं समझ सका। आज भी इसी प्रकार की भ्रांतियां क्षत्रिय युवक संघ के बारे में बनी हुई है। इसका कारण था कि लोग समझ नहीं पाए कि संघ का उद्देश्य क्या है, उसकी कार्यप्रणाली क्या है और वह क्या व्यवस्था देना चाहता है? क्या केवल क्षत्रियों का संगठन बनाना चाहता है अथवा सारे संसार को संस्कारित करके सुख, समृद्धि और शांति प्रदान करना चाहता है? इस बात को लोग आज तक भी नहीं समझ पाए है। और विस्मय की बात यह है कि लंबे समय से संघ में आने वाले भी संघ को ढंग से समझे नहीं हैं इसीलिए दूसरों को समझा भी नहीं पाते श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य लोक संग्रह का है। लोक शिक्षण का है। लोगों को इकट्ठा करना मात्र ही नहीं उनको शिक्षित करना संघ का उद्देश्य है। प्रश्न उठता है कि क्षत्रियों को ही क्यों शिक्षा दी जाए? इसके लिए क्षत्रिय क्या है, वास्तव में क्षत्रिय कौन है, इसे समझना आवश्यक है। हमारे शास्त्रों में कहा है- 'क्षतात किल त्रायते इति क्षत्रिय' अर्थात जो क्षय से बचाने वाला है, वह क्षत्रिय है। किस प्रकार का क्षय? समाज में जो संस्कारों का, मानवीय मूल्यों की मान्यताओं का, धर्म का क्षय हुआ है। इन सब को वापस दिशा देना, यह क्षत्रिय युवक संघ का कार्य है। इसलिए संघ के शिविरों में यह भली प्रकार समझाया जाता है कि संघ का उद्देश्य क्या है, मानवीय जीवन का लक्ष्य क्या है। मानवीय जीवन का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति के अतिरिक्त कुछ हो नहीं सकता क्योंकि इतनी क्षमता केवल मनुष्य को ही मिली है,अन्य प्राणी केवल भोग योनियां हैं। मनुष्य चाहे तो अपना उत्थान कर सकता है चाहे तो अपने आपको गर्त में गिरा सकता है। मनुष्य को पतन के गर्त में जाने से रोकने के लिए क्या किया जाना चाहिए, इसके लिए तनसिंह जी ने बताया कि 'निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता'। जो अपने आपको न सुधार कर संसार का सुधार करना चाहता है वह केवल सपना ही देखता है। तनसिंह जी ने ईश्वर प्राप्ति के लिए मार्ग बताया कि अंतःकरण की शुद्धि के बिना ईश्वर को प्राप्त करना अति दुर्लभ है। तो क्या किया जाए? अंतःकरण शुद्ध कैसे होगा? सद्कर्म से। तो प्रश्न उठता है सद्कर्म क्या है? पूज्य तन सिंह जी ने स्वधर्म-पालन को, अपने कर्त्तव्य पालन को ही सद्कर्म बताया है। क्षत्रिय एक बलिदानी परंपरा का समाज है। त्यागमय जीवन जीने वालों को ही क्षत्रिय कहा जाता है। आज तक के इतिहास में क्षत्रिय के त्याग को कोई चुनौती नहीं दे सका है। पशु-पक्षियों के लिए अपने प्राण देने वाले, सिर कटने के बाद भी लड़ने वाले, अपनी आन-बान-शान की रक्षा करने के लिए जौहर और शाके करने वाले अन्य कोई हुए नहीं हैं संसार में। आज भी यह आश्चर्य बना हुआ है। इसलिए तनसिंह जी ने उसी मार्ग को खोजा जिस मार्ग पर चलकर हमारे पूर्वज संसार को सुशासन देते थे। बीज समाप्त नहीं हुआ है। सुप्तावस्था में पड़े उस बीज को जागृत करने की, संस्कारित करने की आवश्यकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही कार्य करता है। शाखा के माध्यम से एक घंटा प्रतिदिन अभ्यास संघ की कार्य प्रणाली है। हमारे कुसंस्कारों को हटाकर उनकी जगह पर सुसंस्कार डालने का लगातार अभ्यास होता है। इसके पश्चात शिविरों में प्रशिक्षण दिया जाता है। संघ कार्य का निरंतर विस्तार हो रहा है। लेकिन केवल युवकों को प्रशिक्षण देने से समाधान हो नहीं रहा था, इसलिए बालिकाओं, महिलाओं और दंपतियों का भी प्रशिक्षण शुरू हुआ। पूरे समाज को साथ लेने के लिए विभिन्न प्रकल्प भी शुरू किए गए हैं। क्षत्रिय युवक संघ का कार्य देना ही देना है, लेना कुछ नहीं है। पूज्य तनसिंह जी का सिद्धांत था कि समाज से कम से कम लें और अधिक से अधिक दें। इसे लोग पागलपन समझते हैं लेकिन समाज में ढूंढने पर संघ को ऐसे लोग भी मिलते जा रहे हैं जो त्याग करने को तत्पर हैं। यह कोई अलग से पंथ नहीं बन रहा है। हमारे पूर्वजों, मुनियों, ऋषियों द्वारा जो मार्ग दिखाया गया, उसी मार्ग पर चलते हुए यह बदलाव की कल्पना पूज्य तनसिंह जी ने की थी, वह आज फलीभूत हो रही है। 75वां वर्ष चल रहा है। 22 दिसंबर 2021 को संघ की हीरक जयन्ती मनाई जाएगी तथा 2020-21 संघ के लिए हीरक जयन्ती वर्ष है। जन-जन तक क्षत्रिय युवक संघ पहुंचे, यह प्रयास इस वर्ष में करना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ घर-घर तक पहुंचे, इसमें जात-पाँत का भी भेद ना रखें। यदि हम संघ के साहित्य को पढ़ें तो हमें लगेगा कि यह ऐसी एक रामबाण औषधि है जो जीवन में सुख, शांति, समृद्धि ला सकती है। यदि हम ऐसा अनुभव करते हैं तो यह संसार को दिया जाना चाहिए। यह संगठन केवल क्षत्रियों के लिए ही नहीं वरन पूरे संसार की, पूरी मानवता की आवश्यकता है। हम सभी जो क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक, जिम्मेदार लोग, सहायक, समर्थक हैं उन सबको क्षत्रिय युवक संघ के इस यज्ञ में आहुति डालनी चाहिए। लोगों की चेतना को जागृत करके हम सुख शांति का ध्वज फहराएं और इसके अग्रदूत हम ही हों, यह हमारा संकल्प होना चाहिए। हमारे इस कार्य के लिए आलोचनाएं भी होगीं, परंतु इससे घबराना नहीं है। लेकिन अपने आप को संकल्पित रखना है कि जो कदम आपके चले हैं वो रुकेंगे नहीं, थकेंगे नहीं, चट्टाने आ जाएं हम भिड़ जाएंगे, नदियों के रुख को मोड़ देंगें लेकिन हमारे संकल्प को पूर्ण किए बिना रुकेंगे नहीं। न केवल इस जन्म में बल्कि आगे के जन्मों में भी हम यह कार्य करते रहेंगे। इसका लाभ केवल हमको ही नहीं पूरे संसार को मिलने वाला है। जय संघ शक्ति।।

किशोरसिंह गुगड़ी का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **किशोरसिंह जी** गुगड़ी (बागुण्डी) तहसील पचपदरा जिला बाड़मेर का 13 दिसम्बर को देहावसान हो गया। इनके चार पुत्र हैं जिनमें से दो गोविन्दसिंह व सुरेन्द्रसिंह संघ के स्वयंसेवक हैं। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

किशोरसिंह

संग्रामसिंह करड़ का देहावसान

वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं किसान नेता **संग्रामसिंह करड़** का 21 दिसम्बर को देहावसान हो गया। इन्होंने 1949 में उम्मेद नगर जोधपुर में प्रथम शिविर किया। अपने जीवन में 17 शिविर किए। किसान नेता के रुप में आप भारतीय जनता पार्टी से जुड़े रहे। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

संग्रामसिंह करड़

रघुनाथसिंह बैण्यांकाबास को पितृशोक

संघ के स्वयंसेवक रघुनाथसिंह बैण्यांकाबास के पिता एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक दीपसिंह बैण्यांकाबास के भ्राता **गंगासिंह जी** का 20 दिसम्बर को देहावसान हो गया। इन्होंने स्वयं ने भी संघ के दम्पत्ति शिविरों में भाग लिया था। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

गंगासिंह

गांव की सरकार में नव नर्वाचित राजपूत बंधुओं व क्षत्राणियों को सापणदा परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई

श्रीमती सुशील कंवर,
पलाड़ा, जिला प्रमुख,
अजमेर

श्रीमती मधु कंवर,
सापणदा, सरपंच
लल्लाई

श्री होनहार सिंह,
सापणदा प्रधान,
पं. समिति केकड़ी

श्री प्रभाकरण सिंह,
बिसून्दनी, उप प्रधान,
पं. समिति सावर

एवं समस्त जिला परिषद सदस्यों, पंचायत समिति सदस्यों, सरपंचों, उप सरपंचों एवं वार्डपंचों को उनके निर्वाचन पर बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

प्रो. डॉ. रूपसिंह	पृथ्वीसिंह	श्रवणसिंह	भरतसिंह	जितेन्द्रसिंह
बलवीरसिंह	मनोहरसिंह	उदयसिंह	भूपेन्द्रसिंह	अभिनव सिंह

अजमेर जिले से निर्वाचित सभी जनप्रतिनिधियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री भूपेन्द्रसिंह, सावर, पूर्व प्रधान व समाजसेवी

श्री भंवरसिंह, पलाड़ा, समाजसेवी व राजनेता

श्री शैलन्द्रसिंह, पिपलाज, समाजसेवी व ब्लॉक अध्यक्ष (केकड़ी), कांग्रेस

श्रीमती सुशील कंवर, पलाड़ा, जिला प्रमुख, अजमेर

श्रीमती मीनू कंवर, नगर, प्रधान, पं. समिति मसूदा

श्री होनहार सिंह, सापणदा, प्रधान, पं. समिति केकड़ी

श्री प्रभाकरण सिंह, बिसून्दनी, उप प्रधान, पं. समिति सावर

जिला परिषद सदस्य : श्रीमती मीरा कंवर पीपरोली, श्रीमती सुमन कंवर नोसल, श्री महेन्द्रसिंह मझेवला।

पंचायत समिति सदस्य : श्रीमती ऊषा कंवर तिलाना, श्रीमती सीमा कंवर सनोद, श्रीमती नीमा कंवर बड़ली, श्रीमती विशाखा कंवर सावर, श्रीमती मंजू कंवर भराई, श्री संपतसिंह अरड़का, श्री रविन्द्र प्रतापसिंह गुलगांव, श्री वीरसिंह पिचोलिया, श्री गोविन्दसिंह दांतड़ा।

सरपंच - पंचायत समिति केकड़ी : श्रीमती मधु कंवर सापणदा, श्रीमती हंसकंवर कालोड़ा कृ.गो.

पंचायत समिति सरवाड़ : श्रीमती देवांसी कंवर पीपरोली, श्रीमती रेखा कंवर चकवा, श्रीमती राज भंवर कंवर जोतायां, श्रीमती विजय कंवर केबानिया।

पंचायत समिति सावर : श्री विश्वजीतसिंह सावर, श्री विजय प्रतापसिंह टाकावास, श्री महेन्द्र प्रतापसिंह मेहरुकलां, सुश्री रिया पिपलाज।

पंचायत समिति भिणाय : श्रीमती भंवर कंवर बान्दड़वाड़ा, श्रीमती नीता कंवर केरोट, श्रीमती मधु कंवर पाडलिया।

पंचायत समिति मसूदा : श्री नरेन्द्र विक्रमसिंह जामोला, श्री सुरेन्द्र सिंह नगर तथा जिले के समस्त सरपंच, उप सरपंच व वार्ड पंचों को उनके निर्वाचन पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : अंबिका चरणसिंह कालेड़ा कृ.गो., बहादुरसिंह पिपलाज, शंकरसिंह धुवालिया, महेन्द्रसिंह ढोस, घीसूसिंह रामपाली, सुरजभानसिंह खिरिया, सुरेन्द्रसिंह पीपरोली, मदनसिंह सावर, नाहरसिंह सावर, गोपालसिंह कादेड़ा, गोपालसिंह कालेड़ा कंवरजी, भोपालसिंह पथराज, पृथ्वीसिंह हरपुरा, देवेन्द्रसिंह ढिगारिया, नरेन्द्रसिंह कनईकला, देवव्रत सिंह डोराई, छत्रपालसिंह देवलिया खुर्द, विजय बहादुर सिंह बिसून्दनी, महावीरसिंह भीमड़ावास, देवेन्द्रसिंह सांकरिया, पृथ्वीसिंह सापणदा, भगवानसिंह देवगांव, विजयराज सिंह जालिया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org